वर्तमान समय में साहित्य और दर्शन की प्रासंगिकता

डॉ. लता देवी
सहायक आचार्य
संस्कृत–विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला–171005

संक्षेपिका

इतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्र में आज तक जितने भी परिवर्तन आये हैं, वे साहित्य के माध्यम से आये है। साहित्य संस्कृत के 'सहित' शब्द से बना है, साहित्य का अर्थ है 'हितेन सह सहित तस्य भवः' अर्थात् कल्याणकारी भाव से कहा जा सकता है कि साहित्य लोक कल्याण के लिए ही सृजित किया जाता है। साहित्य का उद्देश्य केवल मनुष्य के मस्तिष्क को सन्तुष्ट करना नहीं है, वह तो मनुष्य जीवन को अधिक सुखी और अधिक सुन्दर बनाने की चेष्टा करता है। साहित्य के सहारे मनुष्य–जीवन के दुःख और संकट को क्षण भर के लिये भूल सकता है। मानव समाज का एक अभिन्न अंग है, जीवन में मानव के साथ क्या घटित होता है, उसे साहित्यकार अपने शब्दों में रचकर साहित्य की रचना करता है। वर्तमान काल में मीडिया समाज के लिए एक मजबूत कड़ी साबित हो रहा है।

सर्वप्रथम साहित्य का अर्थ, साहित्य का विकास, साहित्य में विश्व–बन्धुत्व की भावना, साहित्यकार का व्यक्तित्व, साहित्य पर विदेशी प्रभाव तथा दर्शन का शाब्दिक अर्थ, दर्शन का अर्थ और अन्त में निष्कर्ष के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है समाज का मार्गदर्शक है। किसी भी राष्ट्र या सभ्यता की जानकारी उसके साहित्य से प्राप्त होती है। मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान है, साहित्य ने मानव की विचारधारा को गतिशीलता प्रदान की है।

साहित्य का अर्थ

साहित्य संस्कृत के 'सहित' शब्द से बना है, साहित्य का अर्थ है – ''हितेन सह सहित तस्य भवः'' अर्थात् कल्याणकारी भाव से कहा जा सकता है कि साहित्य लोककल्याण के लिए ही सृजित किया जाता है, साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन करना मात्र नहीं है, अपितु इसका उद्देश्य समाज का मार्गदर्शक करना भी है। प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता अति समृद्ध थी,

हमारी सभ्यता इतनी उन्नत थी कि हम आज भी उस पर गर्व करते हैं, भारतीय संस्कृत साहित्य ऋग्वेद से प्रारम्भ होता है।

साहित्यकार के पास साहित्य की ऐसी–ऐसी संजीवनी शक्ति है, जिससे समाज के अनेक लक्ष्मणों को जीवनदान मिलता है।

इतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्र में आज तक जितने भी परिवर्तन आये, वे साहित्य के माध्य से ही आये, साहित्य जनहित के लिए होता है। मानव समाज का एक अभिन्न अंग है, जीवन में मानव के साथ क्या घटित होता है, उसे साहित्यकार अपने शब्दों में रचकर साहित्य की रचना करता है। जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए अविचलित रहना असम्भव हो जाता है। उसकी महान् आत्मा अपने देश–बन्धुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और वह इस तीव्र विकलता में रो उठता है, पर उसके रुदन में व्यापकता होती है। वह स्वेदश का होकर भी सार्वभौमिक होता है साहित्य इस प्रकार विश्वात्मा है और इस विश्वात्मा में राष्ट्रात्मा निवास करती है। इसी आत्मा की प्रतिध्वनि साहित्य है।[1]

मनुष्य स्वभाव की एक विशेषता यह है कि वह अपने को प्रकट किये बिना रह नहीं सकता क्योंकि मनुष्य स्वभाव से ही क्रियाशील प्राणी है, वह कुछ न कुछ करने के लिए हमेशा व्याकुल रहता है। साहित्य मन और स्वभाव की उपज है। इसलिये जिन बातों का प्रभाव मनुष्य के स्वभाव और मनुष्य के जीवन पर पड़ता है, उनका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ता है। साहित्य को इस प्रकार से प्रभावित करने वाले कुछ तत्त्वों पर हम यहां विचार करेंगे।

साहित्य का विकास

किसी भी ग्रन्थकार के ऊपर तीन बातों का प्रभाव पड़ता है, वे बातें इस प्रकार हैं – जाति, स्थिति, काल।

साहित्यकार का व्यक्तित्व

1. जाति – जाति से हमारा अर्थ किसी एक जन–समुदाय के स्वभाव से है।

2. स्थिति – स्थिति से हमारा तात्पर्य उस सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक अवस्था से है।

3. काल – काल से तात्पर्य उस समय की जातीय विकास की विशेषता से है।

साहित्य की एक झलक हमें वैदिक साहित्य में मिलती है कि वेद कालीन आर्यों का जीवन–क्रम अत्यन्त सीधा सादा था। वे अधिकतर वनों में रहा करते थे, पशुओं का भी पालन करते थे। जब कभी वे परमात्मा की स्तुति करने लगते थे तो उनके प्रति भी इनके हृदयों से प्रायः मैत्री भाव की ही अभिव्यक्ति होती हुई प्रतीत होती थी।[2]

साहित्य में विश्व–बन्धुत्व की भावना

साहित्य पर सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव साहित्यकार के व्यक्तित्व पर पड़ता है। साहित्यकार जो कुछ लिखता है उस पर, उसके विचारों और अनुभवों की अटल छाप लगी रहती है। वह मनुष्य–मात्र की आकांक्षाओं और भावनाओं को प्रकट करता है।[3]

साहित्य पर विदेशी प्रभाव

जब दो जातियों में परस्पर सम्बन्ध हो जाता है – चाहे वह सम्बन्ध मित्रता का हो, चाहे व्यवसाय का हो, चाहे अधीनता का हो, तब उनमें परस्पर भावों, विचारों आदि का विनियम होने लगता है। जो जाति अधिक शक्तिशाली होती है, उसका प्रभाव शीघ्रता से पड़ने लगता है, और जो कम शक्तिशाली होती है, वह शीघ्रता से प्रभावित होने लगती है।

साहित्य में समाज के निर्माण के लिए तीन आवश्यक तत्त्वों का होना आवश्यक माना गया है।

- ☐ व्यक्तियों की बहुसंख्या
- ☐ सामाजिक सम्बन्ध
- ☐ सामाजिक अन्तःक्रिया

समाज–निर्माण के लिए व्यक्तियों के समूह में पारस्परिक सम्बन्ध का होना आवश्यक है। इन सम्बन्धों से संगठित रूप को ही समाज कहते हैं।[4] जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने तथा नई–नई बातों को जानने के लिए रूचि प्रकट करता है तथा जो कभी सन्तुष्ट नहीं होता उसे दार्शनिक कहा जाता है।

दर्शन का शाब्दिक अर्थ

दर्शन अंग्रेजी भाषा का रूपान्तर है। इस शब्द की उत्पत्ति ग्रीक के दो शब्दों 'फिलोस' तथा 'सोफिया' से हुई है 'फिलोस' का अर्थ' प्रेम और 'सोफिया' का अर्थ – ज्ञान। इस दृष्टि से ज्ञान तथा उसके वास्तविक स्वरूप को समझने की कला को दर्शन कहते हैं।[5] जिसके द्वारा यथार्थ तत्व या स्वरूप का ज्ञान होता है उसे दर्शन कहते हैं।

दर्शन का अर्थ

दर्शन का अर्थ चिन्तन करने के उस प्रयास से है जिसके द्वारा आत्मा, ईश्वर, प्रकृति तथा सम्पूर्ण जीवन का रहस्य उद्घाटन किया जाता है। इस दृष्टि से मनुष्य क्या है? जीवन क्या है? ईश्वर का स्वरूप क्या है? मृत्यु क्या है? क्या मानव जीवन तथा प्रकृति से परे कोई लोक है? तथा क्या मृत्यु के

पश्चात् कोई और जन्म होगा? इस प्रकार की बातों की खोज करके उस सत्य का उद्घाटन करना दर्शन का मुख्य विषय है। दूसरे शब्दों में, उक्त प्रश्नों के अध्ययन को ही दर्शन कहते हैं।[6]

शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म–जन्मान्तर का सम्बन्ध है। शिक्षा पूर्णरूप से दर्शन पर निर्भर करती है। ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू

है। शिक्षा पेड़ है जिस पर दर्शन के फूल खिलते हैं। दर्शन के बिना शैक्षिक प्रयास अन्धा प्रयास होगा। ''दर्शन के बिना शिक्षा अन्धी है और शिक्षा के बिना दर्शन पंगु है।'' ये दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान काल में मीडिया समाज के लिए एक मज़बूत कड़ी साबित हो रहा है, समाचार – पत्रों की प्रासंगिकता सदैव रही है और भविष्य में भी रहेगी। कुछ समाचार–पत्र ऐसे भी हैं जो साहित्य को संजोए हुए हैं, साहित्य की अनेक पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं परन्तु उनके पास पर्याप्त संसाधन न होने के कारण उन्हें सदैव राष्ट्र और समाज को नई दिशा देने का कार्य किया है साहित्य के विकास की कहानी मानव सभ्यता के विकास की गाथा है, इसलिए यह अति आवश्यक है कि साहित्य लेखन निरन्तर जारी रहना चाहिए, अन्यथा सभ्यता का विकास अवरूद्ध हो जाएगा।

ग्रन्थ–सूची

1. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना, पृष्ठ,2
2. भारतीय साहित्य में सांस्कृतिक रेखाएं, पृष्ठ, 170

3. साहित्य विद्याओं की प्रकृति, पृष्ठ, 33

4. हिन्दी संत–काव्य समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृष्ठ, 171

5. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, पृष्ठ, 137

6. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, पृष्ठ, 137